# पारिस्थितिक स्वच्छता और समाज।

- प्रस्तावना।
- हमारी भारत स्वच्छ है क्या?
- स्वच्छता न होने से क्या होगा?
- स्वच्छता कैसे बनाए रखे?
- उपसंहार।

## प्रस्तावना।

पारिस्थितिक स्वच्छता, पारिस्थितिक स्वच्छता क्या है? हमारे चारों ओर के जगहों को और अपने आप को स्वच्छ रखना ही पारिस्थितिक स्वच्छता है। लेकिन आज का समाज इसको समजता है क्या? नहीं, बिलकुल भी नहीं। अगर समजता तो आज हर एक सड़कों में गंदगी नहीं होती। लोगों को नाक बंद करना नहीं पड़ता लोगों को

चलते वक्त नाक बँद करना नहीं पड़ता। हमारी बड़ी बड़ी विकसित शहरें भी आज कूड़े-कचरों से बश पड़ा है। क्या यही था हमारे राष्ट्रपिता गाँधीजी का सपना? नहीं। वे भारत को स्वच्छ और सुंदर चाहते थे। लेकिन ~~आज~~ आज उनकी सपना, एक सपना ही रह गया। स्वच्छ भारत अभियान के बाद भी भारत स्वच्छ ~~है~~ नहीं है। इसका परिणाम कोई छोटी-मोटी सी नहीं है। मानव के जान के लिए भी खतरा हो सकता है। गंदगी फैलने से बीमारियाँ बढ़ती है। हम पारिस्थितिक स्वच्छता कैसे बनाए रखें? इसकेलिए ~~मे~~ थो सबसे पहले हमें अपने मन को और अपने आप को स्वच्छ बनाना चाहिए। फिर ही हम अपने चारों ओर की जगहों को स्वच्छ बना पाएँगे। हर साल अक्तूबर दो, गाँधी जी जयंती के दिन हम ~~स्कूल में~~ स्वच्छता कार्यक्रम ~~रखा~~ रखते हैं। लेकिन वह स्वच्छता सिर्फ एक दिन के लिए सीमित रह जाता है। ~~ऐसा~~ ऐसा ~~को~~ क्यों? हमें हर दिन स्वच्छता

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 948 Participant Code: 303

कार्यक्रम ~~स्व~~ रखना चाहिए और स्वच्छता बनाए रखना चाहिए।

'हमारी भारत स्वच्छ है क्या?

आज हमारी भारत स्वच्छ है क्या? यह सवाल हम सबको अपने आप पूछ लेना चाहिए। क्या हम भारत को स्वच्छ रख रहें है? मैं मेरे देश को स्वच्छ बनाने केलिए ~~क्या~~ क्या कर सकता/सकती हूँ? क्या मैं अपने आप को स्वच्छ रख रहीं/रहाँ हूँ? क्या मेरा घर और आँगन साफ है? क्या मेरा स्कूल स्वच्छ है? क्या मेरे समाज के लोग पारिस्थितिक स्वच्छता को समजते हैं? ~~ईर~~ इन ~~सब~~ सभी सवालों का जवाब ढूँढना हमारा ~~द~~ दायित्व है।

हमारी भारत की समाज स्वच्छता बनाए रखने में बहुत पीछे है। घर ~~से~~ ~~के~~ से बाहर निकलते ही दिखने लगेगा गंदगी।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

रुमाल से नाक ढके बिना शहरों में घूमना मुश्किल बन गया है। स्वच्छ भारत अभियान का असर सिर्फ कुछ ही महीनों के लिए था। प्लास्टिक की उपयोग निषेद करने के बाद भी उसका उपयोग कम नहीं हुआ। कूड़ेदान होने हुए भी लोग सड़क के किनारे कचरा फैंकते है। कूड़ेदान के अंदर नहीं कूड़ेदान के बाहर कचरा मिलता है। जो लोग कूड़ेदान के पास कचरा फैंक सकते हैं वे उसके अंदर क्यों क्यों नहीं डाल पाते? गाँव के लोगों केलिए हर घर में शौचालय बनाके दिया है सरकार ने। लेकिन आज भी बहुत सारे लोग खुले मैदान को य फिर खेत को अपना शौचालय बना रहे हैं। तालाबों में नहा रहे है, अपने गाय बकरीयों को नहला रहे है, बर्तन, कपड़े धो रहे हैं। यह सब कब रुकेगा?

रेलवे स्टेशन और बस स्टैनड की बारे में न बोलना ही अच्छा है। रेलगाड़ी

की शौचालय ~~को~~ में ~~उपयोग~~ भी लोग बहुत मुश्किल से जा पाते है। कुछ लोग भी गंदगी के कारण जाते ही नहीं। भारत आज जनसंख्या में पूरी दुनिया में सबसे आगे है। यह भी हमारी स्वच्छता न होने केलिए ~~का~~ एक कारण है। सफर करते वक्त सबसे ज़्यादा दिखाई देनेवाली एक दृश्य है ~~लोगों~~, लोग बस य ~~रेलगाड़ि~~ रेलगाड़ी के बाहर कचरा फेंकना। और जब छोटे बच्चे यह करते हैं, उनके माता पिता उन्हें रोकते भी नहीं। घर ही पहला विद्यालय है। और अगर अपने माता पिता ही ऐसे है, तो बच्चों से क्या ही उम्मीद रखें? अगर ऐसे ही चलता रहा ~~भी~~ तो हमारा समाज कभी नहीं सुधरेगा। स्वच्छता न होने से बहुत ~~ही~~ ज़्यादा परेशानी होगा। आज बीमार लोगों की संख्या बढ़ने का ~~एक~~ बहुत बड़ा कारण भी स्वच्छता न बनाए रखना ही है।

# स्वच्छता न होने से क्या होगा?

गंदगी और बीमारी बचपन की दोस्तों के तरह है। जहाँ जहाँ गंदगी है, वहाँ वहाँ बीमारी भी होगी। कोरोना के समय में ~~सब~~ डॉक्टर, सरकार, सभी लोग कहते थें, मास्क पहनो, हाथ को अच्छी तरह से साफ करो, गंदी हाथों से नाक, आँख, मुँह, चहरा,... कुछ भी मत छुओ। पानी और खाने के चीज़ो को ढ़क कर रखो। खाने के पहले और बाद, शौचालय से आकर हाथ को अच्छी तरह से साफ करो। यह सब स्वच्छता ~~को ही संकेत~~ के ओर ही संकेत करते हैं।

जैसे गंदगी और बीमारी वैसे ही स्वच्छता और स्वास्थ्य दोस्त हैं। जहाँ स्वच्छता है वहाँ स्वास्थ्य भी होगा। स्वास्थ्य के बिना मानव कुछ भी नहीं है। ~~इसलिए~~ और अगर ~~से~~ स्वास्थ्य

बनाए रखना है, तो स्वच्छता भी बनाए रखना पड़ेगा। मैं थोड़े दिन पहले न्यूज़ में आया था की चीना कोई नई बीमारी शुरू हुई है। अभी ही हमें उसके विरुद्ध जागरूक रहना चाहिए। स्वच्छता बीमारी को हरानेवाली तलवार है।

नदियों, समुद्रों, और तालाबों में गंदगी फैलाने से पानी में रहनेवाले जीव-जंतुओं को परेशानी हो रही है। बहुत सारे मछलीयाँ गंदी गंधी पानी के कारण मर रहें है। वहाँ से पानी लेनेवाले इनसान इनसानों को भी बहुत दिक्कत हो रही है। फॉक्टरी से बाहर आनेवाली रसायनिक गंदगी जल पानी और वायु को कलुशित कर रहीं है। वायु को गंदा करना भी स्वच्छता न होना ही है। गंदगी फैलाने से सिर्फ मानव और जीव-जंतु नहीं प्रकृति माँ भी परेशानी झेल रही है। प्रकृति मलिनीकरण पारिस्थितिक स्वच्छता न

होना ही है। आज बीमारीयाँ बढ़ने की और पहले ज़्यादा शक्तिशाली होने की कारण पारिस्थितिक स्वच्छता का अभाव और हमारे समाज की लापरवाही ही है।

पारिस्थितिक स्वच्छता कैसे बनाए रखें ?

पारिस्थिक स्वच्छता के बारे में समझने के बाद अगला सवाल उठता है पारिस्थितिक स्वच्छता बनाए कैसे रखें ? पारिस्थितिक स्वच्छता से पहले हमें अपने मन को और अपने आप को स्वच्छ बनाना चाहिए। हमें अपने मन में ही शपथ ले लेना चाहिए की "मैं मेरे घर, समाज, और देश और अपने आप को स्वच्छ रखूँगा / रखूँगी और दूसरों को भी पारिस्थितिक स्वच्छता बनाए रखने केलिए प्रोत्साहित करूँगी / करूँगा"

डेंगू, मलेरिया, कोरोना इत्यादी बीमारीयों के समय में सभी लोग कुछ स्वच्छता

नियमों की पालन करते थे। और जब वह बीमारियाँ थोड़ी कम होने लगी तब वे लोग उन नियमों को भूल गए। लेकिन ये नियम सिर्फ थोड़े समय के लिए नहीं हमें हमारी जीवन भर के लिए है।

वह नियम कुछ ऐसे थे :- हाथ और मुँह को अच्छी तरह से साफ करो, गंदी हाथों से आँख, नाक, मुँह और चेहरा मत छुओ, खाने-पीने की चीज़ो को अच्छी तरह ढक कर रखो, बीमार लोगों से दूर रहो, अगर आप बीमार हो तो मास्क पहनो, खाने के से पहले और बाद, हाथ और मुँह अच्छे से धोओ, शौचालय से आकर हाथ साफ करो, अपने नाखूनों को साफ रखो, घर और आँगन को साफ रखो, सड़कों, नदियाँ, समुद्रों और तालाबों में कूड़ा-कचरा मत फैंको, कूड़ेदान का सही उपयोग करो, प्रकृति को साफ रखो आदी....

अगर हम इन सभी नियमों का पालन करेंगी करेंगे तो हम पारिस्थितिक स्वच्छता बनाए रख सकते हैं।

हमें ज़्यादातर प्लास्टिक का उपयोग नहीं करना चाहिए, सफर करते वक्त अपने कचरे कूड़े-कचरे को बाहर सड़क में फैंके बिना कूड़ेदान में फैंकना चाहिए। और हमारे केरल सरकार ने "हरिता कर्मसेना" की नामक एक योजना जारी की है। हम सभी को अपने घर के कूड़े-कचरे को उन्हे दे देना चाहिए और हमारे आँगन को साफ रखना चाहिए।

## उपसंहार

हमारे आँगन, घर, स्कूल, कॉलेज, समाज, सड़क, और देश को साफ रखना हमारा दायित्व है। हम हर साल अप्रैल सात को स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाते हैं। यह दिन हमें सिर्फ स्वास्थ्य के महत्व के बारे में

नहीं पारिस्थितिक स्वच्छता के बारे में भी बताना चाहिए। सिर्फ अक्तूबर दो को नहीं सब हर दिन हमें अपना घर, आँगन और समाज को स्वच्छ रखना चाहिए। घरों और स्कूलों में बच्चों को सफाई के महत्व के बारे में बता देना चाहिए। सभी लोग समाज के सभी लोगों को पारिस्थितिक स्वच्छता के बारे में बताना चाहिए। उनसे अपने समाज को स्वच्छ बनाए रखने से होनेवाले अच्छाई के बारे में बताना चाहिए। स्वच्छ भारत अभियान सिर्फ एक अभियान बनकर नहीं रहना चाहिए, वह सच्चाई बनना चाहिए। भारत सिर्फ जन संख्या में नहीं स्वच्छाई में भी नं. 1 होना चाहिए। आज की बच्चे ही कल के प्रजा है, इसलिए सबसे पहले हमें उनमें बदलाव लाना है। फिर हमारा समाज जरूर बदल जाएगा। गाँव के लोगों में कुछ ज्यादा जानकारी देना चाहिए। हमें

और हम सभी एक साथ मिलकर जुलकर काम करेंगे तो कुछ भी असंभव नहीं है। हमारे समाज पारिस्थितिक स्वच्छता को बनाए रखेगा तो ज़रूर हमारा देश दुनिया में सबसे सुंदर, और स्वच्छ होगा।

"हम सब मिलकर पारिस्थितिक स्वच्छता बनाए रखते हैं और गांधीजी की स्वच्छ भारत की सपना को सच्चाई बना देते हैं"